# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
| --- | --- | --- | --- |
| दैनिक भास्कर | 1.03.23 | 4 | 1-3 |

• विवि में मेडिटेशन को सहपाठ्यक्रम के रूप में किया जाएगा शामिल

## कृषि विश्वविद्यालय में छात्रों को दी जाएगी ट्रेनिंग, बनाई जा रही योजना : आरसी अग्रवाल

महबूब अली | हिसार

देशभर के कृषि विवि में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को टेंशन मुक्त करने के लिए जल्द ही खेलों के साथ-साथ मेडिटेशन को सहपाठ्यक्रम के रूप में शामिल होने की शुरुआत हो सकती है। इसके लिए आईसीएआर के अधिकारी सभी विवि के छात्रों को ट्रेनिंग देने की योजना बना रहे हैं। इस संबंध में सभी विवि के वीसी और अन्य पदाधिकारियों से भी सुझाव मांगे गए हैं।

कृषि विवि में छात्रों के लिए समय-समय पर प्रतियोगिताएं आयोजित कराई जाती रहती है, जिससे वह खुद को फिट और स्वस्थ्य रख सके। यही नही सराहनीय प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित भी किया जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप-महा निदेशक (शिक्षा) डॉ. आर.सी. अग्रवाल सोमवार को हिसार के एचएयू में विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि छात्रों के तनाव को दूर करने तथा मेडिटेशन के बारे में जानकारी देने के लिए

मेडिटेशन को सहपाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए आईसीएआर विशेष तौर से सभी कृषि विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को ट्रेनिंग देने की योजना बना रहा है। इससे छात्रों को मेडिटेशन की महत्ता के बारे में भी जानकारी हो सकेगी। उन्हें प्रैक्टिकल रुप से भी मेडिटेशन कराया जाएगा। अभी अधिकारियों में विचार विमर्श चल रहा है। जल्द ही इस पर मुहर लगने की संभावना है।

### मेडिटेशन के फायदें...

- ध्यान योग के अभ्यास के दौरान शरीर की आंतरिक ऊर्जा पर मस्तिष्क को केंद्रित किया जाता है, जिससे मन का भटकना कम होता है और यह मानसिक स्वास्थ्य संबंधी लाभ प्रदान करती है।
- ध्यान योग के कई प्रकार के भावनात्मक लाभ हो सकते हैं।
- तनावपूर्ण स्थितियों पर काबू पाकर एक नया दृष्टिकोण प्राप्त करने में सहायक।
- आत्म-जागरूकता बढ़ाने में मदद करती है।
- वर्तमान समय पर ध्यान केंद्रित करने में सहायक है।
- नकारात्मक भावनाओं को कम करती है।
- कल्पना और रचनात्मकता में इजाफा होता है।
- धैर्य और सहनशीलता बढ़ती है।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक जागरण | 1-03-23 | 4 | 2-6 |


# प्राकृतिक खेती व मोटे अनाज को बढ़ावा देना समय की मांग

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने और किसानों के बीच लोकप्रिय बनाए जाने के आह्वान के साथ संपन्न हुई।

कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। इसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे, जबकि महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डा. नरहरि बांगड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटाइलेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाज (मिलेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थी डिजिटल तकनीक उपयोग करके हजारों किसानों का डाटा विश्लेषण करके किसानों की जरूरत के अनुसार कृषि शोध का काम करने में मदद कर रहे हैं।

मंच पर मौजूद मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज व अन्य। • पीआरओ।

## कृषि में नवीनतम तकनीक अपनाकर कृषि लागत को कम किया जा सकता है : डा. नरहरि बांगड़

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डा. नरहरि बांगड़ ने बताया कि दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला मे खरीफ फसलो पर गहन चिंतन हुआ है, जोकि किसानो की कृषि से संबंधित समस्याओ से निपटारा पाने मे सहयोग करेगी। कृषि विभाग चारे की कमी को पूरा करने के लिए 2.5 लाख टन क्षमता के साईलेज यूनिट बनाने पर काम कर रहा है। चारा फसलो के बहु-वर्षीय फसल चक्र अपनाकर व साइलेज बनाकर गौशालाओं मे चारे की आपूर्ति की जा सकती है। कृषि मे नवीनतम तकनीक अपनाकर कृषि लागत को कम किया जा सकता है। बिजाई, पानी मे घुलनशील पोषण तत्वों का छिड़काव, कीटनाशकों का छिड़काव ड्रोन तकनीक द्वारा किया जा सकता है। कृषि विभाग 500 किसानो को ड्रोन आपरेट करने की ट्रेनिंग देने के बाद उन्हें ड्रोन पायलट का लाइसेंस दिलवाने की योजना बना रहा है। इस मौके पर सहायक निदेशक प्रकाशन डा. हवासिंह सहारण व केवीके महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डा. रमेश यादव भी मंच पर मौजूद रहे। डा. सुनील ढांडा ने का धन्यवाद ज्ञापित किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि. भूमि | 1.02.23 | 9 | 3-6 |

### प्राकृतिक खेती व मोटे अनाज को बढ़ावा देना समय की मांग: प्रो. कांबोज

# साथ बैठ किसान हित में काम करें कृषि वैज्ञानिक

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार



हिसार। मंच पर मौजूद वीसी प्रो. बी.आर काम्बोज व अन्य।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने और किसानों के बीच लोकप्रिय बनाए जाने के आह्वान के साथ संपन्न हुई। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। इसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटाईलेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किए जाने पर भी जोर दिया।

उन्होंने बताया कि कृषि अधिकारियों, विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों व योजनाकार को एक साथ बैठकर किसानों के हित के लिए काम करने चाहिए। साथ ही बेहतर योजनाओं को जल्दी से जल्दी उपलब्ध करवाना चाहिए।

## खरीफ फसलों पर गहन चिंतन : डॉ. बांगड़

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़ ने बताया कि दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में खरीफ फसलों पर गहन चिंतन हुआ है, जोकि किसानों की कृषि से संबंधित समस्याओं से निपटारा पाने में सहयोग करेगी। कृषि विभाग चारे की कमी को पूरा करने के लिए 2.5 लाख टन क्षमता के साइलेज यूनिट बनाने पर काम कर रहा है। चारा फसलों के बहु-वर्षीय फसल चक्र अपनाकर व साइलेज बनाकर गोशालाओं में चारे की आपूर्ति की जा सकती है। कृषि विभाग 500 किसानों को ड्रोन ऑपरेट करने की ट्रेनिंग देने के बाद उन्हें ड्रोन पायलट का लाइसेंस दिलवाने की योजना बना रहा है। इस मौके पर सहायक निदेशक डॉ. हवासिंह सहारण व केवीके महेंद्रगढ़ से डॉ. रमेश यादव भी मंच पर मौजूद रहे। डॉ. सुनील ढांडा ने अतिथियों का स्वागत किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 1-03-23 | 2 | 1-4 |

# दिन का तापमान 35 डिग्री से अधिक हो जाए तो किसान करें गेहूं में सिंचाई

## एचएयू में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन, किसानों को दी सलाह

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। गेहूं की फसल पर बढ़ते तापमान का प्रभाव रोकने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने एडवाइजरी जारी की है। प्रदेश भर के कृषि अधिकारियों को यह एडवाइजरी दी गई है। यह अधिकारी फील्ड में किसानों को जानकारी उपलब्ध कराएंगे। किसानों को जागरूक करेंगे। अधिकारियों ने बताया कि अगर दिन का तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक जाए तो गेहूं में सिंचाई करें।

एचएयू में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का मंगलवार को समापन हुआ। इसमें गेहूं की फसल के उत्पादन को लेकर चिंता जाहिर की गई। बैठक के पहले दिन कृषि विभाग की अतिरिक्त प्रधान सचिव सुमिता मिश्रा ने फरवरी माह में बढ़ते तापमान को लेकर चिंता जाहिर की थी। उन्होंने इस बारे में एचएयू के वैज्ञानिकों से किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करने का अनुरोध किया था। बैठक में एचएयू कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने गेहूं की फसल को लेकर अवगत कराया। उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष बारिश के बाद अचानक से तापमान में बढ़ोतरी हुई थी। जिस कारण उत्पादन पर असर पर हुआ था।

एचएयू में आयोजित कार्यशाला में मंच पर उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर कांबोज, कृषि महानिदेशक नर हरि सिंह बांगड़ व अन्य। संजय

### पोषण सुरक्षा के लिए मोटे अनाज की खेती जरूरी : प्रो. कांबोज

मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्री.आर कांबोज ने कहा कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटाइलेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे। पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिलेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य करना होगा।

**फव्वारा सिंचाई का बेहतर समय दोपहर :** एचएयू के गेहूं वैज्ञानिक डॉ. ओपी बिश्नोई ने कहा कि अगर दिन का तापमान 35 से अधिक रात का तापमान 15 डिग्री होगा तो नुकसान होगा। अगर तापमान इससे कम रहा तो उत्पादन सामान्य रहेगा। उन्होंने कहा कि अगर तापमान इस तय सीमा से अधिक जाए तो किसान हल्की सिंचाई करें। सिंचाई की समय सीमा 20 दिन से कम कर 15 दिन करें। जहां फव्वारा सिंचाई की सुविधा हो वहां दोपहर के समय फव्वारा चलाएं।

### साइलेज बनाने पर काम करेगा विभाग

विशिष्ट अतिथि कृषि विभाग के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़ ने बताया कि चारे की कमी को पूरा करने के लिए 2.5 लाख टन क्षमता के साइलेज यूनिट बनाने पर काम कर रहा है। चारा फसलों के बहु-वर्षीय फसल चक्र अपनाकर व साइलेज बनाकर गोशालाओं में चारे की आपूर्ति करेंगे। खेती में ड्रोन तकनीक के लिए कृषि विभाग 500 किसानों को ड्रोन ऑपरेट करने की ट्रेनिंग देने के बाद उन्हें ड्रोन पायलट का लाइसेंस दिलाएगा।

400 ग्राम पोटाशियम 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। जिससे काफी हद तक नुकसान से बचा जा सकेगा। उन्होंने बताया कि एक से तीन मार्च, सात मार्च के आसपास वेस्टन डिस्टरबेंस आएंगे। जिस कारण तापमान में कुछ गिरावट आएगी। कार्यशाला (खरीफ) के दूसरे दिन प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने के संकल्प के साथ संपन्न हुई। कार्यशाला में खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 01.03.23 | 4 | 6 |

## कृषि अधिकारियों की कार्यशाला संपन्न

हिसार, 28 फरवरी (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने के आह्वान के साथ संपन्न हुई। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटाईलेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे।

उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किए जाने पर भी जोर दिया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स | 28.02.2023 | ------- | -------- |

# प्राकृतिक खेती व मोटे अनाज को बढ़ावा देना समय की मांग : प्रो. बी.आर काम्बोज

**सिटीपल्स न्यूज, हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने और किसानों के बीच लोकप्रिय बनाए जाने के आह्वान के साथ संपन्न हुई। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

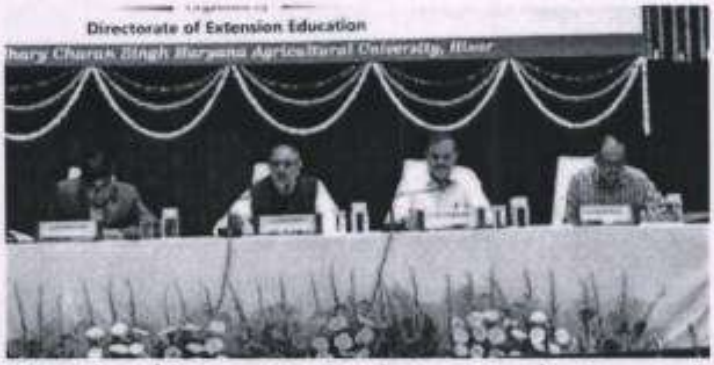


कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटाईलेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने बताया कि कृषि अधिकारियों, विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों व योजनाकार को एक साथ बैठकर किसानों के हित के लिए काम करने चाहिए। साथ ही बेहतर योजनाओं को जल्दी से जल्दी उपलब्ध करवाना चाहिए। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थी डिजिटल तकनीक उपयोग करके हजारों किसानों का डाटा विश्लेषण करके किसानों की जरूरत के अनुसार कृषि शोध का काम करने में मदद कर रहे हैं।

कृषि में नवीनतम तकनीक अपनाकर कृषि लागत को कम किया जा सकता है :डॉ. नरहरि बांगड़

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़ ने बताया कि दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में खरीफ फसलों पर गहन चिंतन हुआ है, जोकि किसानों की कृषि से संबंधित समस्याओं से निपटारा पाने में सहयोग करेगी। इसी कड़ी में बिजाई, पानी में घुलनशील पोषण तत्वों का छिड़काव, कीटनाशक दवाईयों का छिडकाव ड्रोन तकनीक द्वारा किया जा सकता है। कृषि विभाग 500 किसानों को ड्रोन ऑपरेट करने की ट्रेनिंग देने के बाद उन्हें ड्रोन पायलट का लाईसेंस दिलवाने की योजना बना रहा है। इस मौके पर सहायक निदेशक प्रकाशन डॉ. हवासिंह सहारण व केवीके महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव भी मंच पर मौजूद रहे। डॉ. सुनील खांडा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक हिसार | 01.03.2023 | ------- | -------- |

# प्राकृतिक खेती व मोटे अनाज को बढ़ावा देना समय की मांग : प्रो. बी.आर काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने और किसानों के बीच लोकप्रिय बनाए जाने के आह्वान के साथ संपन्न हुई। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे, जबकि महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटाईलेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने बताया कि कृषि अधिकारियों, विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों व योजनाकार को एक साथ बैठकर किसानों के हित के लिए काम करने चाहिए। साथ ही बेहतर योजनाओं को जल्दी से जल्दी उपलब्ध करवाना चाहिए।

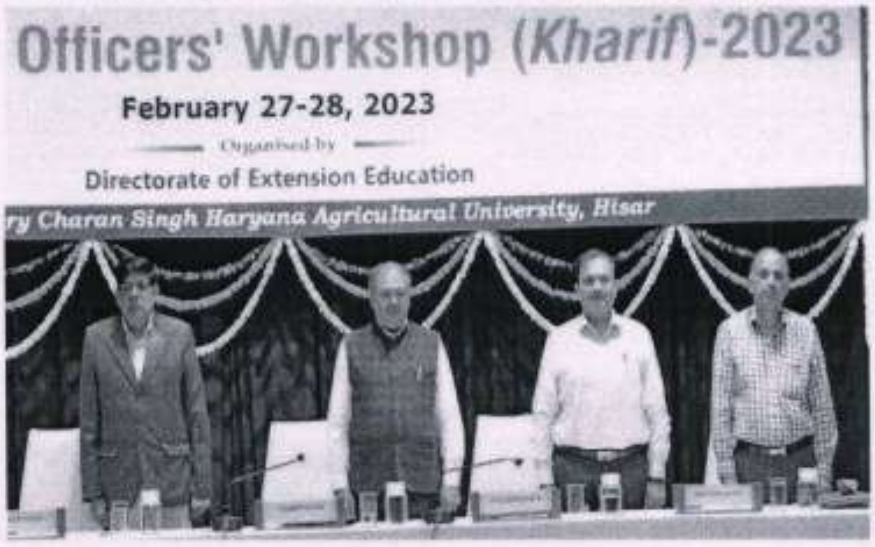

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पांच बजे | 28.02.2023 | ------- | -------- |

# प्राकृतिक खेती व मोटे अनाज को बढ़ावा देना समय की मांग : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने और किसानों के बीच लोकप्रिय बनाने के आह्वान के साथ संपन्न हुई। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटलाईजेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिलेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने बताया कि कृषि अधिकारियों, विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों व योजनाकार को एक साथ बैठकर किसानों के हित के लिए काम करने चाहिए। साथ ही बेहतर योजनाओं को जल्दी से जल्दी उपलब्ध करवाना चाहिए। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थी डिजिटल तकनीक उपयोग करके हजारों किसानों का डाटा विश्लेषण करके किसानों की जरूरत के अनुसार कृषि शोध का काम करने में मदद कर रहे हैं।

**कृषि में नवीनतम तकनीक अपनाकर कृषि लागत को कम किया जा सकता है : डॉ. नरहरि बांगड़**

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़ ने बताया कि दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में खरीफ फसलों पर गहन चिंतन हुआ है, जोकि किसानों को कृषि से संबंधित समस्याओं से निजात पाने में सहायक होगी। कृषि विभाग खाद की कमी को पूरा करने के लिए 2.5 लाख टन क्षमता के बायोगैस प्लांट लगाने पर काम कर रहा है। खाद फसलों के बहु-वर्षीय फसल चक्र अपनाकर व बायोगैस बनाकर गौशालाओं में खाद की आपूर्ति की जा सकती है। कृषि में नवीनतम तकनीक अपनाकर कृषि लागत को कम किया जा सकता है। इसी कड़ी में सिंचाई, पानी में घुलनशील पोषक तत्वों का छिड़काव, कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव ड्रोन तकनीक द्वारा किया जा सकता है। कृषि विभाग 500 किसानों को ड्रोन ऑपरेट करने की ट्रेनिंग देगा व साथ इन ड्रोन प्रयोग का लाइसेंस दिलवाने की योजना बना रहा है। इस मौके पर सहायक निदेशक प्रकाशन डॉ. राजबीर [illegible] व कार्यशाला के संयोजक डॉ. [illegible] भी मौजूद रहे। डॉ. सुशील [illegible] ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

**कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर निम्नलिखित सिफारिशें स्वीकृत की गई :-**

1. बाजरा फसलों से अच्छी पैदावार लेने के लिए 12 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ + 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति एकड़ + 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट के घोल का छिड़काव बिजाई के 25 से 30 दिन के बीच में, एकीकृत प्रयोग सिंचित बिजाई वाले क्षेत्रों के लिए जारी करें।
2. चारा प्रणाली की लाभप्रदता बढ़ाने के लिए व वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए बहुवर्षीय ज्वार की खेती एक बेहतर विकल्प है। इसकी बीज व जड़ दोनों विधियों से की जा सकती है। बहु-वर्षीय ज्वार एक बार लगाने के बाद पांच वर्षों तक लगातार हरा चारा देते है। जिससे 5 कटाई प्रति वर्ष ली जा सकती है।
3. धान की शीथ ब्लाइट बीमारी का नियंत्रण करने के लिए 150 मि.ली. थाइफ्लुजामाइड 24 एससी (पल्सर) को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से पहला छिड़काव बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर तथा दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।
4. कपास की फसल में हरा तेला एवं सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए एफिडोपायरोपेन (सेफीना) 50 जी.एल. डी.सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा (20 ग्राम क्रियाशील तत्व) को 200-250 लीटर पानी में मिलाकर आर्थिक कगार आने पर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
5. बी.टी. कपास से अधिक उत्पादन लेने के लिए बौकी बनने की अवस्था, अधिकतम फूल बनने की अवस्था एवं टिंडे बनने की अवस्था पर सिंचाई या बारिश से पूर्व एवं बाद (12 घंटे के भीतर) में यूरिया की 25 कि.ग्रा. और कोबाल्ट क्लोराइड की एक ग्राम मात्रा को 100 लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।
6. अनाज में निम्न व मध्यम पोटाश वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. पोटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| समस्त हरियाणा | 28.02.2023 | -------- | -------- |

## प्राकृतिक खेती व मोटे अनाज को बढ़ावा देना समय की मांग : प्रो. बी.आर काम्बोज

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हिन्दुस्थान समाचार | 28.02.2023 | -------- | -------- |

## हिसार: प्राकृतिक खेती व मोटे अनाज को बढ़ावा देना समय की मांग: कुलपति कम्बोज

28 Feb 2023 18:09:31

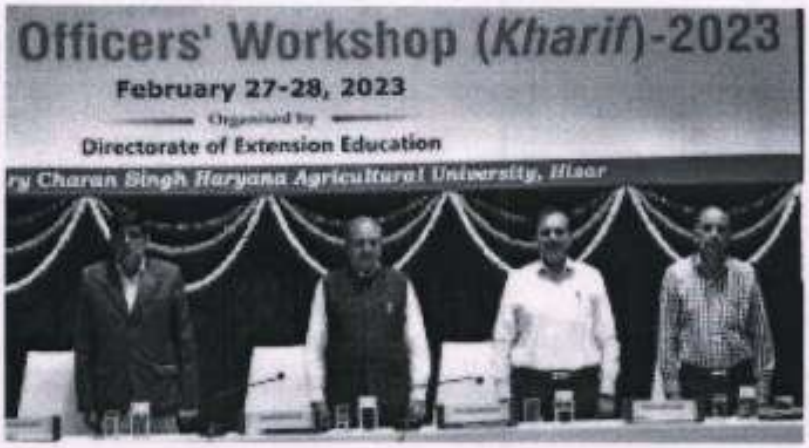




दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) का समापन

दो दिवसीय कार्यशाला में खरीफ फसलों पर हुआ गहन चिंतन : डॉ. दांगड़

हिसार, 28 फरवरी (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा है कि रसायनों का कम प्रयोग करके, प्राकृतिक खेती, अवशेष प्रबंधन और डिजिटाईलेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर हमें कृषि के क्षेत्र में तेजी से काम करने होंगे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिलेट्स) की खेती व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। वे मंगलवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) के समापन अवसर पर संबोधित कर रहे थे।

यह कार्यशाला प्राकृतिक खेती व मोटा अनाज को बढ़ावा देने और किसानों के बीच लोकप्रिय प्रसार करने के आह्वान के साथ संपन्न हुई। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. नरहरि दांगड़ इसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि कृषि अधिकारियों, विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों व योजनाकार को एक साथ बैठकर किसानों के हित के लिए काम करने चाहिए। साथ ही बेहतर योजनाओं को जल्दी से जल्दी उपलब्ध करवाना चाहिए। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थी डिजिटल तकनीक उपयोग करके हजारों किसानों का डाटा विश्लेषण करके किसानों की जरूरत के अनुसार कृषि शोध का काम करने में मदद कर रहे हैं।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. नरहरि दांगड़ ने बताया कि दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में खरीफ फसलों पर गहन चिंतन हुआ है, जो कि किसानों की कृषि से संबंधित समस्याओं के निपटारा पाने में सहयोग करेगी। कृषि विभाग चारे की कमी को पूरा करने के लिए 2.5 लाख टन क्षमता के साईलेज यूनिट बनाने पर काम कर रहा है। चारा फसलों के बहु-वर्षीय फसल चक्र अपनाकर व साईलेज बनाकर गौशालाओं में चारे की आपूर्ति की जा सकती है। कृषि में नवीनतम तकनीक अपनाकर कृषि लागत को कम किया जा सकता है।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
## लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| इंडिया न्यूज | 28.02.2023 | -- | -- |

# प्राकृतिक खेती और मौसम की सटीक भविष्यवाणी समय की मांग : प्रो. बी.आर काम्बोज

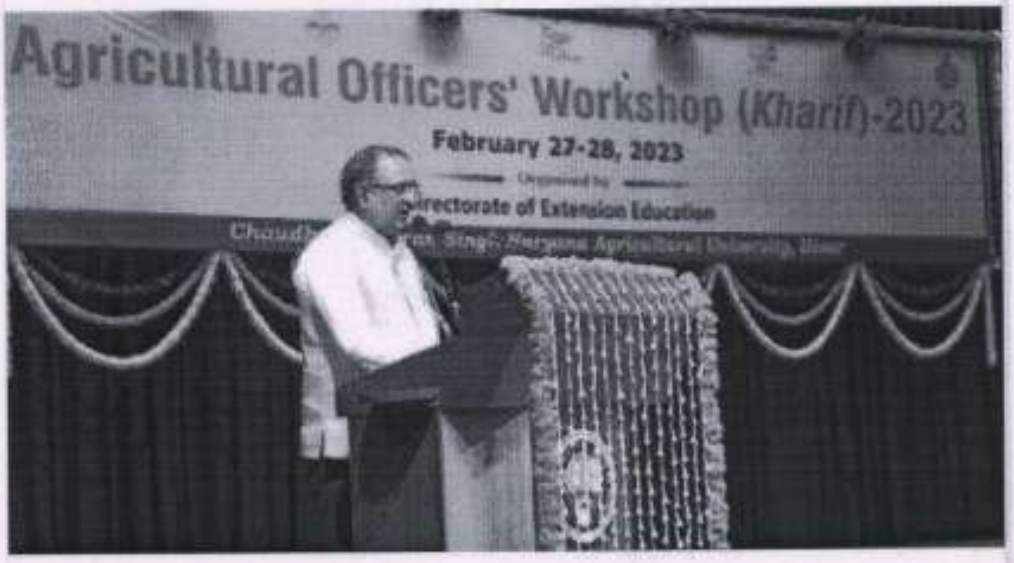

admin February 27, 2023




- कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) का शुभारंभ, प्रदेश भर से कृषि अधिकारी करेंगे मंथन

27 फरवरी, हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज से दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल डॉ. सुमिता मिश्रा व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के कृषि विज्ञान केंद्रों में प्राकृतिक खेती के मॉडल लगाए गए हैं, जिससे किसान प्रत्यक्ष रूप से जानकारी हासिल कर प्राकृतिक खेती को अपना सकेंगे। जलवायु अनुकूलन को देखते हुए हमें हर क्षेत्र के लिए विशेष फसल चक्र को अपनाना होगा। उन्होंने कीटों व पाला से फसल खराब होने से बचाने के लिए वैज्ञानिकों को शोध करने के लिए आह्वान किया। हमें ब्लॉक स्तर पर मौसम प्रयोगशाला बनाने की जरूरत है, जिससे किसानों को कम समय में और अधिक ठीक पूर्वानुमान मिल सकेगी। विश्वविद्यालय में 10 एकड़ में गुड एग्रीकल्चर प्रैक्टिस (जी.ए.पी) विकसित किया जा रहा है जिसको किसान अपने खेतों में अपनाकर फायदा उठा सकेंगे। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों के लिए की गई सिफारिशों पर मंथन करते हुए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर किया गया है।

प्राकृतिक खेती के अंतर्गत 20 हजार एकड़ का लक्ष्य : डॉ. सुमिता मिश्रा

डॉ. सुमिता मिश्रा ने बताया कि वर्तमान परिवेश में सबसे बड़ी चुनौती जलवायु परिवर्तन है। इससे निपटने के लिए सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं तैयार कर रही है। गत वर्ष कृषि विभाग ने प्रदेश में 2500 एकड़ के लक्ष्य को पार करते हुए 6 हजार एकड़ में प्राकृतिक खेती करवाई थी। प्राकृतिक खेती की तरफ किसानों के बढ़ते रूझान को देखते हुए विभाग किसानों को जीवामृत व बीजामृत बनाने की ट्रेनिंग देगा, जिससे आने वाले खरीफ सीजन में प्राकृतिक खेती के अंतर्गत 20 हजार एकड़ के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इस बार सरकार ने धान की सीधी बिजाई (डीएसआर) का लक्ष्य 1 लाख एकड़ से बढ़ाकर 2 लाख एकड़ रखा है। साथ ही समर मूंग का लक्ष्य पहले 10 से 15 एकड़ था लेकिन इस बार 1 लाख एकड़ का लक्ष्य रहेगा। डॉ. मिश्रा ने बताया कि जैविक कार्बन बढ़ाकर मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए ढैंचा को हरी खाद के रूप में उगाने का 6 लाख एकड़ का लक्ष्य है, जिसके लिए कृषि विभाग 75 फीसदी अनुदान पर ढैंचा बीज किसानों को उपलब्ध करवाएगा। वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे बागवानी खेती को बढ़ावा देने और किसानों तक सस्ता और सरल तरीके से उन तक पहुंचाने के लिए कदम उठाने की बात कही। इसके अलावा हर किसान को मृदा हेल्थ कार्ड देने की योजना सरकार की तरफ से चलाई जा रही है।

कृषि महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़ ने बताया कि सरकार किसानों की आय बढ़ाने के लिए लगातार प्रयासरत है। किसान अपने खेती खर्च कम करके और अपने उत्पाद में वैल्यू एडिशन कर अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने देश के खाद्यान्न उत्पादन में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण योगदान की प्रशंसा की।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कार्यशाला की विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक (तकनीकी) डॉ. आर.एस. सोलंकी ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने सभी का स्वागत किया व मंच संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया। इस कार्यशाला के दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों के लिए अपने विचार रखेंगे।